गीत:- लो प्रभु मिलन की रूत आई गूँज उठी है शेहनाई
ओम शांति,

आज का दिन हम सभी के जीवन के इतिहास का अति सुंदर दिवस है। आप सभी दूर दूर से प्रभु मिलन का सुख पाने के लिए यहाँ पर आये है। हम सभी अब अपनी मनोस्थिति को तैयार करेंगे ताकि यह ईश्वरीय सुख हमारे जीवन की यादगार बन जाए। आज हमें बहोत कुछ सीखना है, बाबा को बहोत अच्छी तरह देखना है। सभी को याद रहे **धरती पर आकर भगवान् अपना परिचय तो देते ही है परन्तु उनको सम्पूर्ण रूप से जानना, उनके प्यार में मगन हो जाना यह हमारी स्थिति पर निर्भर करता है।** जितना हम अपनी बुद्धि को स्वच्छ करते जाते है उतना उतना हमारी क्लीन बुद्धि, हमारी स्वराज्य की स्थिति हमें धीरे धीरे यह अभाष देती है ज्ञान देती है कौन है भगवान्, कैसा है वोह। वोह हमें कितना प्यार करता है और उसकी शक्तियां कितनी अनंत है।

मुझे आज सवेरे से बाबा की एक बहोत गुह्य बात याद रही थी कभी बाबा ने साकार रूप में कहा - **जब तुम मुझे सम्पूर्ण रूप से जान जाओगे तो तुम सम्पूर्ण बन जाओगे। तुम इस धरा पर नहीं रह सकोगे सम्पूर्ण बन कर अपने धाम चले जाओगे।** बहोत सूक्ष्म बुद्धि का विषय है। स्वयं को जितना जितना हम जानते जायेंगे हमारी समज में गहराई से आता जायेगा की बाबा क्या है। तो आज हम सभी अपने से चिंतन करेंगे। में आज के इस मिलन की तैयारी के साथ आप सब के समक्ष कुछ वोह बातें भी रख रहा हूँ जिससे इस अलौकिक जीवन की यात्रा सरल हो जाए जिससे लौकिक जीवन भी संतुष्टता से भरपूर हो जाए। सभी बहोत अच्छी तरह इस बात को जानले **हमारे संकल्प ही हमारे जीवन का निर्माण करते है, हमारे संकल्प ही हमारे भविष्य की नीव रखते है।** जो कुछ आज हम है वोह पास्ट के संकल्पों का परिणाम है और जो संकल्प अब हम करेंगे वैसा ही हमारा भविष्य होगा। यह सिद्धांत लौकिक और अलौकिक दोनों जीवन पर सामान रूप से लागु होता है।

तो आज बहोत सुंदर दिन है - में एक बात से शुरू कर रहा हूँ आज से बाबा के इस मिलन के साथ सभी एक संकल्प अपने मन में करले **हम अपने लिए अच्छे से अच्छा सोचेंगे।** मनुष्य अपने लिए नेगेटिव सोचता रहता है, अपने लिए उसके मन में कमजोर और निराशा के संकल्प मन में चलते है इसका प्रभाव सीधा हमारे मस्तिस्क पर, हमारे सम्पूर्ण शरीर पर और हमारी मनोस्थिति पर पड़ता रहता है। हम अपने भविष्य की एक विजन बनाये, एक **लक्ष्य बनाये सुंदर सा लक्ष्य अपने जीवन का और उस लक्ष्य के लिए अपने को समर्पित करें उसको पाने के लिए पूरा जोर लगायें।**

अब हमारे सामने ट्रैफिक कण्ट्रोल का समय आरहा है हम सभी एक स्वरुप में बैठेंगे और इसी के साथ हम तैयारी का आरम्भ करेंगे - में चमकती हुयी आत्मा हूँ। अपने को बहोत चमकते हुए सम्पूर्ण पवित्र, तेजस्वी आत्मा देखेंगे और संकल्प देंगे में स्वराज अधिकारी हूँ। लाल लाइट करेंगे सभी राजा बन कर अपने अपने भ्रकुटी सिंहासन पे बैठ जाए में चमकती हुयी ज्योति हूँ राजा स्वराज्य अधिकारी हूँ भ्रकुटी सिंहासन पे बिराजमान और उपर से बाबा को देखे बाबा की किरणे मुझ पर पड़ रही है। एकाग्र करदे अपने चित्त को परमातम स्वरुप पर और उससे आ रही किरणों पर।

सभी एक चीज आजसे और सीखे - **अपने जीवन के महान लक्ष्य को पाने के लिए छोटे छोटे लक्ष्य बनाये।** में कुछ लक्ष्य आपके सामने रख रहा हूँ उसमे से एक इम्पोर्टेन्ट लक्ष्य हो - **मुझे खुश रहना है।** बात सुनने में छोटी है परन्तु आजकल संसार में खुश रहना ही बहोत कठिन काम होता जा रहा है। सभी अपनी सद्बुद्धि का प्रयोग करें हम खुश क्यूँ नहीं रहते? बहोत लोग ऐसे भी है संसार में जिनके पास सब कुछ है फिर भी खुश नहीं रहते। एक इम्पोर्टेन्ट बात इसमें सभी साथ लेले आजसे - नो कम्पेरिजन। **तुलना नहीं। दुसरो से जब हम तुलना करते है तो हमारी ख़ुशी**

चली जाती है।

एक छोटा सा अनुभव सुना देता हूँ पिछली बार का ताकि किसी की ख़ुशी गुम ना हो। **एक माता** बाबा के मिलन के लिए आई थी उसको सदैव एक संकल्प रहता था। यह विचार कर ले कैसे एक एक संकल्प मनुष्य को परेशान करता है। बाबा सबको तो बहोत प्यार करता है मुझे नहीं करता। मेरे पास आई यह समस्या लेकर कहा मुझे यह तुलना करने की आदत बहोत पड़ गयी है इसलिए में जीवन में खुश नहीं रहती हूँ तो यह संकल्प बताया बाबा सबको तो बहोत प्यार करता है मुझे नहीं करता। मेने कहा तुम्हे किसने बताया की तुम्हे नहीं करता? तो सोचने लगी। अनुभव सुनाया की बाबा से मिलन के लिए में बैठी बहोत अच्छी स्थिति बाबा की मुरली चली, बहोत अच्छा अनुभव हुआ जैसे ही मुरली समाप्त हुयी कुछ दादियाँ स्टेज पर आई बस कम्पेरिजन होने लगा उनको ही प्यार करता है मुझे नहीं करता और सारा आनंद समाप्त हो गया।

सभी ध्यान दे अपने लिए सुंदर संकल्प करें। अगर यह येही सोचती बाबा मुझे बहोत प्यार करता है, संसार में सब से ज्यादा वोह मुझे प्यार करता है तो कितना आनंदित होता जीवन। अपने लिए सुंदर संकल्प। निराशा की और ले जाने वाले संकल्पों को त्याग कर के बैठेंगे। आज सारा दिन सभी ने अच्छा अभ्यास तो किया ही होगा। और अभी बैठने के लिए कहीं आपकी मन पसंद जगह न मिली हो तो अपने मन को शांत कर दे, चित्त को बिलकुल शांत करें **बाबा के अनुभव सीट के आधार पर नहीं स्थिति के आधार पर होते है** यह हमें सम्पूर्ण रूप से समजना है। आप कोने में बैठे है, वहां गलरी में पीछे उपर बैठे है अनुभव स्थिति के आधार पर होंगे। अभी से अपनी स्थति को ख़ुशी और प्रेम से भरदे सभी। कितनी ख़ुशी की बात है, नशे की बात है जिसे हम जनम जनम बुलाते आये, जिसके दर्शनों के लिए हम प्यास लिए भक्ति करते आये वोह स्वयं हमसे मिलने आरहे है। केवल मिलने ही नहीं आरहे है ध्यान देंगे सभी अपना सब कुछ हमें देने के लिए आरहे है। बाबा वरदान भी देते है हमें सर्वश्व कैसे प्राप्ति हो, बाबा के सभी खजानों के हम अधिकारी कैसे बने देते भी है और मार्ग भी दिखाते है। तो बहोत प्यार हो बाबा से, अपने से प्यार करें सभी वाह मेरा भाग्य आज इन आँखों से वोह सब कुछ देखने को मिलेगा जिसकी युगों से प्यास थी। आज हम सब तृप्त हो जायेंगे। अच्छे संकल्प क्रियेट करें मुझे बाबा से मिल कर सम्पूर्ण रूप से तृप्त हो जाना है। यह नहीं हुआ यह नहीं हुआ कोई आभाव रह गया इस सभी संकल्पों को छोड़ कर यहाँ बैठेंगे।

में साथ में यह भी कहदुं कुछ भाई बहेने इस अंतिम मिलन के रूप में ऐसे भी आते है ऐसे आये भी है जिनको **मन में थोडा थोडा संसय है** **की क्या सचमुच भगवान् आता है?** भगवान् आता है? उन्हें कुछ थोडा थोडा विश्वास कम हो रहा है की क्या सचमुच वही आएगा जिसको हम जनम जनम से पुकारते आये है? यह संसय परमातम मिलन के सुख को समाप्त कर सकता है। इसलिए जिन लोगो ने मैथमेटिक्स पढ़ा है वोह जानते होंगे कई प्रोब्लेम्स को सोल्व करने के लिए एक विधि का प्रयोग किया जाता है मान लो थिस इस इक्वल तो थिस मानलो यह बराबर यह जब रिजल्ट आता है तो वोह बात सत्य सिद्ध हो जाती है। जो भी मन में संसय लेके बैठे हो वोह अब कुछ घडी के लिए मान ले की आज हमारे बिच में वही आ रहा है जिसके मिलने की हमें जनम जनम से इन्तेजार थी और फिर अपने अनुभवों से यहाँ फैले वातावरण से चारो और छाये हुए वाय्ब्रेसंस से अनुभव करेंगे की सुचमुच परम सत्ता के बिना सर्व शक्तिवान के बिना, प्यार के सागर के बिना, ऐसा वातावरण, ऐसे वाय्ब्रेसंस और कोई क्रेअट नहीं कर सकता। बहोत गुड फिलिंग में बैठे अपने चित्त को पूरी तरह शांत करके इस संकल्प के साथ बैठे आज हमें हमारी जनम जनम की भक्ति का फल मिलने जा रहा है, आज हमारी जनम जनम की प्यास बुझने जा रही है, आज से हमारे जीवन की दिशा बदल जायेगी एक संकल्प दे अपने को। तो सभी संसय के संकल्पों को एक तरफ हटा कर बहोत ख़ुशी के साथ बहोत आनंद के साथ, एक अच्छी विजन के साथ इस मिलन के लिए सभी बैठेगे। ख़ुशी और प्रेम की तरंगे हम यहाँ से पुरे विश्व की तरफ

भेजेंगे। कल बाबा कह रहे थे कितनी सुंदर बात थी - में आता हूँ तुम्हे यह सिखाने की सदा ख़ुशी में कैसे रहे। तुलना करना छोड़ दे अपनी ईश्वरीय प्राप्तियों को बार बार याद करें।

और एक छोटी सी बात बड़ी इम्पोर्टेन्ट बात जीवन के लिए ले ले कामनाएं नहीं। **न किसी से तुलना न किसी से कुछ पाने की कामना। तुलना और कामना ही हमारी ख़ुशी को नष्ट करती है।** चले फिर से हम लाल लाइट इस देह से पूरी तरह स्वयं को अलग कर दें संकल्प दे अपने को में आत्मा इस देह में अवतरित हुयी हूँ, मेने इस देह में प्रवेश किया है, में भृकुटी सिंघासन पर आ बैठी हूँ, में इस देह में आई हूँ बाबा कहता है इस संसार में शांति का साम्राज्य स्थिपित कर दें, इस धरा को पुनह स्वर्ग बनाने में बाबा को साथ देने के लिए में अवतार हूँ। देह से एक दम न्यारी आत्मा अपने स्वरुप को देखे, में आत्मा शांत और पवित्र हूँ मुझसे चारो और शांति की और पवित्रता की किरणे फ़ैल रही है।

ओम शांति

सभी आत्माओ के लिए अपने चित्त को प्रेम से भरना यह अलौकिक और लौकिक जीवन को सरल और सुगम करने की विधि है। आज यहाँ बैठ कर हम सभी अपने मन में सभी धर्म की आत्माओ के लिए निश्वार्थ, निष्काम, निर्मल प्रेम पैदा करें। सब आत्माएं हमारे है, यह सभी संसार समस्त संसार हमारा परिवार है। हम सब एक के बच्चे है, एक ही घर के रहने वाले है, जीवन का सम्पूर्ण सुख पाना है तो प्रेम भरना आवश्यक है।

बाबा की स्पस्ट बात हमने सुनी है की **कई बच्चे कहते है की बाबा हमें आपसे तो बहोत प्यार है, आपके सिवाय हमारी बुद्धि में कुछ नहीं है पर आत्माओ से हमें प्यार नहीं है। बाबा ने सीधा सीधा उत्तर दे दिया यदि बाप के परिवार से आत्माओ से प्यार नहीं है तो बाप तुम्हारे प्यार को स्वीकार नहीं करते।** अपने चित्त को प्यार से भरपूर करें, घृणा से खाली करें, नफरत और इर्षा से खाली करें तभी हम विश्व का कल्याण कर सकेंगे, तभी हम संसार को कुछ दे सकेंगे। याद रखनी है सूक्ष्म बात - यदि हमारे मन में दूसरी आत्माओ के लिए उमंग प्यार नहीं होता तो हमारी वाय्ब्रेसंस हमारी शुभ भावनाएं उन्हों तक जाती नहीं। खुद से भी हमें बहोत अच्छी फीलिंग्स नहीं होती क्यूंकि परमातम प्यार में मग्न होने के लिए हमें सभी आत्माओ की और से भी अच्छे वाय्ब्रेसंस आने ही चाहिए।

चलो कुछ क्षणों के लिए हम फिरसे उसके प्यार में मग्न हो जाए जो हमारी जीवन नैया का खेवैया बना है, जिसने हमें सदा साथ देने के वायदा किया है जिसने आकर हमारे जनम जनम के कष्ट हर लिए है खो जाए उसके प्यार में जो हमें बहोत प्यार करता है, देखे उपर उसकी प्यार भरी दृष्टी हमारी और आ रही है।

ओम शांति।

एक **सुंदर सी विधि** सभी अपने साथ ले जायेंगे पुरे जीवन के लिए कहीं भी मन भारी होने लगे, कही भी किसी समस्या का समाधान ना मिले, किसी भी बात के कारन चित्त बैचैन हो जाए, रात को नींद ना आये उस बात को बाबा को समर्पित कर दे। बहोत सुंदर विधि है यह। रोज रोज हमें प्रैक्टिस करनी है ताकि यह में और मेरा पन समाप्त होकर चित्त में समर्पण भाव बढ़ता जाए। समर्पण भाव को हम सिंपल शब्दों में हम ऐसे कह देते है सब कुछ तेरा। और जब हम समर्पनता की बात करते है तो कई आत्माएं केवल धन को समर्पण करने का विचार करती है लेकिन एक और बहोत अच्छी चीज समर्पणता के बारें में आप जान ले जीवन में इससे दिव्यता आजायेगी अभी संकल्प कर ले **आज से मेरा हर कर्म तुम्हारे लिए है।** जो कर्मो में ही अभाष है मनुष्य को में अपने लिए कर्म करता हूँ, अपने परिवार के लिए हम धन कमाते है, अपने बच्चो के लिए हम भोजन बनाते है, हम अपने लिए यह काम कर रहे है इसको जरा ट्रान्सफर करें सब कुछ तेरे लिए, मेरा हर कर्म तेरे लिए, कर्म का परिणाम भी तेरे लिए। में इसका बहोत विष्तार नहीं करूँगा लेकिन जीवन की बहोत सुंदर धारना है क्यूंकि यह कर्म हमें बहोत प्रभावित कर रहे है हर क्षन हर कर्म का

सूक्ष्म इफ़ेक्ट हमारे अंतर चित्त पर रहता है। हम बहोत अच्छी तरह अपने को ट्रेन कर दें मेरा हर कर्म बाबा के लिए परमात्मा के प्रति है अपने लिए नहीं इससे हमारे कर्म हमें बाधेंगे नहीं, स्वीकार है सभी को यह बात?

आज सभी समर्पित करें अपनी उन कठनायियो को जीवन को भारी कर रहे है, जो परिवार में कलह क्लेश पैदा कर रही है, जिनमें आपको यह समज में नहीं आता की में क्या करूँ? जहाँ भी मन इस संकल्प से बोझिल हो जाएँ में क्या करूँ? वहां बाबा को अर्पित कर देंगे। समाधान भी तुरंत मिल जाएगा मन भी हल्का हो जाएगा रिजल्ट बहोत सुंदर हो जायेगी।

में आपसे कह रहा था में इस बात को सभी के अंतर चित्त में समा देना चाहता हूँ **आज से अपने लिए, अपने परिवार के लिए, अपने बच्चो के लिए अच्छे से अच्छा सोचना प्रारंभ करें।** बहोत लोग बहोत क्या संसार में सभी मातपिता अपने बच्चो के लिए बहोत चिंतित रहते है पता नहीं इनका भविष्य कैसा होगा? सभी को याद रखना है जिनके लिए भी आप चिंतित है, **जिनके लिए भी आपके मन में कमजोर संकल्प उठ रहे है आप उन्हें कमजोर कर रहे है।** सभी ध्यान से सुनले इस बात को जिसके लिए आप चिंता कर रहे है उसे आपकी और से कमजोर वाय्ब्रेसंस जा रहे है वोह आत्माएं और कमजोर होती जायेगी। क्यूँ ना सोचा जाए क्या सोचेंगे आज से आप? हमारे बच्चो का भविष्य बहोत सुंदर होगा, यह महान बनेगे, यह हमारे कुल का नाम रोशन करेंगे, इनको भविष्य में कोई कठनाई नहीं होगी। अपने लिए भी शुभ चिंतन, अपने परिवार और बच्चो के लिए भी सुंदर चिंतन।

में आपको इसका **नेगेटिव उदाहरण** दे देना चाहता हूँ। क्या गलती करते है लोग जो गरीब है वोह बार बार सोचते है हम तो बहोत गरीब है हमारे पास तो पैसा नहीं है इसलिए हम तो बाबा की सेवा नहीं कर सकते हम इसलिए मधुबन भी नहीं जा सकते हमारा तो भाग्य ही ऐसा है। जो आप बार बार सोचेंगे वही होता रहेगा। बहोत अच्छा सोचो हम बहोत धनवान है।

मुझे कल ही एक **बहोत अच्छी बात** सुनाई की उन्होंने क्लास में पूछा गरीब कौन है इस क्लास में जो सबसे ज्यादा गरीब हो वोह हाथ उठाओ। एक माता बैठी थी जो सचमुच सब से ज्यादा गरीब थी उसने हाथ नहीं उठाया जब क्लास करने वाले ने उसे कहा की माता तुम तो बहोत गरीब हो हाथ क्यूँ नहीं उठाती? उसने बड़ा सुंदर उत्तर दिया - **भगवान् के बच्चे कभी गरीब होते है क्या?**

सच येही है **गरीब तो वही है जिनका मन गरीब है, गरीब तो वही है जो अपने को गरीब समजते है।** बाबा ने हमें अथाह खजाने दिए है क्या हमारी ख़ुशी? **क्या हमारी शांति की कीमत कोई हमें दे सकता है? जो संतोष, जो आनंद, जो ईश्वरीय नशा हमें प्राप्त हुआ है क्या वोह किसी धनवान को प्राप्त हो सकता है? जिस चैन से हम बाबा की गोद में सो जाते है, धनवान लोग धन के नशे में, अहम् के नशे के कारण सो नहीं पाते।** अपने संकल्पों को सुंदर रखे।

यह बात अपने अंदर ग्रहण करले **जैसा हम बार बार सोचेंगे वैसा ही दिखाय देगा। अपने लिए भी कोई न सोचे मेरा तो योग नहीं लगता, हम तो क्रोध को जित नहीं सकते, हम तो पवित्र बन नहीं सकते इन कमजोर संकल्पों को आज से ही विदाई दे देंगे।** सोचो भगवान् को कैसा लगता होगा जब वोह देखता होगा की उसके मास्टर सर्व शक्तिवान बच्चे छोटी छोटी बातों से परेशान हो रहे है। अपने लिए सुंदर विचार करेंगे।

चले हम फिर से एक सुंदर अनुभूति की और। अपने चित्त को बिलकुल एकाग्र कर दे में सर्व शक्तिवान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, में बहोत शक्तिशाली हूँ, परमातम शक्तियां मेरे पास है, मेने माया को चैलेंज किया है, माया पर मेरी जित निश्चित है, बाबा ने अपनी सम्पूर्ण शक्तियां मुझे दी है, स्वीकार करें मेरे पास परमातम शक्तियां है में ईश्वरीय बल से परिपूर्ण हूँ मेरे पास ईश्वरीय बल है परमातम शक्तियां मेरे साथ काम कर रही है संसार की सभी परिस्थितयों से समस्यायों से में बहोत ही बलवान हूँ उपरे देखे परमधाम में सर्व शक्तिवान है उनसे चारो

और शक्ति की किरणे फ़ैल रही है बहोत तेजस्वी स्वरुप देखे उनका बाबा की यह शक्तियों की किरणे निचे आ रही है मुझ में समां रही है

ओम शांति

सभी बहोत अच्छा चिंतन करेंगे। संगम युग का यह हमारा जीवन जो अनमोल जीवन है इसमें हम वोह प्राप्त कर सकते है जो चारो युग काम आएगा। इसमें हम वोह सब कर सकते है जो अब के आलावा कभी नहीं होंगे। तो चिंतन करेंगे हर एक अपने से बात करें मुझे अपना जीवन किस किस तरह बिताना है ताकि सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्तियां और वरदान मेरे हो जाए। ताकि बाबा हमें जो सम्पूर्ण भाग्य दे रहा है हम उस भाग्य को अधिकार से प्राप्त कर ले। अपने से चिंतन करें **संगमयुग पर जो मनुष्य अपने को कहीं उलझा दे वोह बुद्धिमान नहीं है, बुद्धिमान तो वही है जो ईश्वरीय प्राप्तियों की और चले, जो अपने चित्त को चारो और से मुक्त रखे जो अपनी बुद्धि को स्थिर रखे भटकने ना दे। हम सभी को परमातम बुद्धि प्राप्त है, दिव्य बुद्धि प्राप्त है, बहोत सुंदर समय हम सब के हाथ में है।** बुद्धिमान मनुष्य वही होता है संसार में भी जो समय का सम्पूर्ण रूप से लाभ उठा लेता है, हमारे पास ऐसा समय आया है और ऐसा समय आरहा है में आपको सभी को यह बात बार बार कहता हूँ मुझे बहोत अच्छा अभाश होता है बाबा के अनेक संदेशो से एक मास में जो सन्देश आये है उनसे ही स्पस्ट दिख रहा है की यह संसार ऐसी विकराल परिस्थि की तरफ बढ़ने जा रहा है, बढ़ गया है जहाँ मनुष्य की चैन समाप्त हो जायेगी। हमने मुरली में सुना दुखो के पहाड़ गिरेंगे। हम सभी न केवल अपने को तैयार करें उन सब चीजो के लिए बल्कि हम अपने को तैयार करें की हमें संसार को सकास देनी है।

में एक सुंदर संकल्प अपने पास भी रखता हूँ और आपको भी कहूँगा की यह संकल्प रख ले **हम जब इस संसार से जाएँ तो इस संसार को बहोत कुछ देकर जाएँ।** पीछे बाबा कहते आये है - **तुम मुक्तिधाम में तब तक नहीं जा सकोगे जब तक सभी आत्माओ को दुखो से मुक्त नहीं करदो।** तैयार करें अपने को अपने चिंतन के लेवल को ऊँचा उठाएं। छोटी छोटी बातों में अपने को उलझा कर न रखे देना है हमें सम्पूर्ण संसार को **दे वही सकेंगे जो भरपूर होंगे, दे वही सकेंगे जो योग युक्त होंगे, दे वही सकेंगे जिनके पास सम्पूर्ण पवित्रता का बल होगा।**

में बता दूँ सभी भाई बहेनो को हमारे विदेश की युवको की सायद कुमार कुमारियों की भट्ठी हुयी बहोत सुंदर टॉपिक था सम्पूर्ण पवित्रता बहोत अच्छा टॉपिक चुना। हमारी सम्पूर्ण पवित्रता, हमारी पवित्रता इस संसार के लिए बहोत बड़ी ब्यूटी है, सुन्दरता है हमारा जीवन ही इस संसार के लिए बहोत बड़ी चीज है। हमारे यहाँ ज्ञानसरोवर में भी बहोत अच्छा २१ दिन का योग का प्रोग्राम चल रहा है, सभी ऐसा ही प्रोग्राम चलायें अपने अपने घर में एक बात और कह कर फिर आप सभी को उस तैयारी की और ले चलूँगा जिसका सुख आज हमें पाना है।

अपने अपने घरो की समस्याओं को समाप्त करने के लिए सभी भाई बहेने अपने **घर में कम से कम दो बार बैठ कर योग अभ्यास करने का प्लान** बनाये। समस्याएं बढ़ी है बढ़ेगी। हम योग बल से स्वमान के बल से समस्याओं को समाप्त कर ने के अनुभव को आगे बढाएं। समस्याएं आजाएं उनमे उलझने की बजाएं योग बल का प्रयोग करें योग में बैठे। उसके लिए रोज **अमृतवेले को छोड़ कर पंद्रह पंद्रह मिनट कम से कम दो बार अपने घर में** घर के वातावरण को चार्ज करने के लिए सभी अभ्यास करें। इससे बहोत सारी आने वाली समस्याएं दूर से ही नष्ट हो जायेगी अगर थोड़ी बहोत आई भी तो वोह योग की शक्ति से समाप्त हो जायेगी।

आज बाबा हम सब के बिच में आ रहे है फिर से चितन में चले सुंदर तिन घंटे तक हम सभी महान आत्माएं भगवान् के साथ आज बैठेंगे तिन घंटे उसके प्रकाश में उसकी शक्तियों के वाय्ब्रेसंस में हम सब बैठेंगे कितना बड़ा भाग्य है यह हम सब का। उन वाय्ब्रेसंस से हम स्वयं को भरपूर करदें। अपने को सम्पूर्ण रूप से एकाग्र करके बैठेंगे।

याद रखेंगे अब से ही मन में ऐसे विचारो की रचना करना शुरू कर दे जिससे मन आनंदित रहे। क्लास के बिच और दादी के आने तक भी आधा पोना घंटा आपके पास रहेगा आप उठ भी सकते है फ्रेश होने के लिए लेकिन सभी अपने मन की स्थिति को एकाग्र रखेंगे, सुंदर विचार रखेंगे।

में अपनी ही बात सुनादुं आपको बाबा अव्यक्त हुए और बाबा हिस्ट्री हॉल में आया करते थे कभी कभी अपने कमरे में भी आते थे जैसे ही में बाबा के सामने बैठता था जब हम बाबा का आह्वाहन करते थे आज भी करेंगे मन में यह विचार होते थे आप सब भी ऐसे विचार करेंगे। आज स्वयं भगवान् हमसे मिलने आरहा है कितना सुंदर भाग्य है हमारा आज भगवान् हमारे घर में मेहमान बन कर आरहा है हम कैसे उसका स्वागत करेंगे? नैनो में क्या समायें जो भगवान् का सम्मान हो जाए? जब बाबा आजाता था, आज भी जब बाबा आजाये तो पहला संकल्प आप मन में करना **वांह मेरा भाग्य सामने भगवान् बैठा है जिसके दर्शनों के लिए तपस्वी तरस रहे है वोह मेरे सामने है। आज मुझे उसके मधुर महावाक्य, वरदान इन कानो से सुनने मिलेंगे, मिल रहे है।** ऐसे ऐसे गुड थॉट। मेरी जनम जनम की भक्ति पूर्ण हो गयी, मेरे पुन्य फलीभूत हो गए, मेने जरूर बहोत अच्छे काम किये है जो इस समय आज आकर में भगवान् के सम्मुख बैठ गयी हूँ। ऐसे सुंदर विचारो से अपने मन को आनंदित करेंगे।

पुरे जीवन के लिए भी याद रखेंगे हमारे मन की खुराक, हमारी बुद्धि का भोजन हमारे श्रेष्ठ संकल्प है। यदि हम मन और बुद्धि को श्रेष्ठ संकल्प नहीं देते तो प्यासा मन भटक जाता है। अगर हम अपने चित्त को, मन को, बुद्धि को स्थिर करना चाहते है तो ऐसे श्रेष्ठ संकल्पों की रचना मन में करें जिससे मन जैसे हम भोजन खाके तृप्त हो जाते है मन बुद्धि संकल्पों का भोजन खा कर शांत हो जाए, स्थिर हो जाए। तो आज बाबा हमारे बिच में आरहे है बहोत ख़ुशी की बात है ख़ुशी शब्द तो इसके लिए बहोत छोटा है, परम आनंद का विषय है स्वयं भगवान् हमारे बिच में आरहे है।

एक अभ्यास करेंगे छोटा सा - लाल लाइट जला दे - संकल्प करें प्यार का सागर अपना धाम छोड़ कर हमारे पास आरहे है, हम बाबा को दिल से सच्चे प्यार से निमंत्रण देते है, चले सभी उपर वही जाकर हम उसको निमंत्रण देंगे, सामने देखे सर्व शक्तिवान को है प्यार के सागर हे तत्व हम नैन बिछाये सच्चे दिल से अति आदर पूर्वक आप का आह्वाहन कर रहे है है प्राणेश्वर इस धरा पर पुनः आपका स्वागत है अपना धाम छोड़ कर आप आजाओ। हमारे दिल का निमंत्रण सुन कर महाज्योति अपनी तेजस्वी किरणों को चारो और फैलाते हुए निचे उतरने लगे दिव्य बुद्धि से सर्व शक्तिवान निचे आगये है सूक्ष्म वतन में अगये है ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर में प्रवेश किया अब दोनों निचे आरहे है आकाश मार्ग से एक तेजस्वी फ़रिश्ता निचे उतर रहा है। आगये बापदादा निचे दृष्टी दे रहे है सभी अपने सामने देखे और बाबा ने अपनी चार बजाएं मेरे सर पे फैलादी है बोले मीठे बच्चे में हजार भुजाओ सहित तुम्हारे साथ हूँ तुम अकेले नहीं हो में हजार भुजाओ सही तुम्हारे साथ हूँ। हजार भुजाओ की छत्रछाया। मेरे सर की उपर।
ओम शांति

दादी आएँगी हमारे बिच में पहले हम बाबा को भोग लगते है गीत बजेंगे तब हम अपने चित्त को स्थिर करके बाबा को ऐसे ही प्यार से निमंत्रण देते रहेंगे और देखते रहेंगे की बाबा किस तरह से हमारे बिच में आ रहे है। जब बाबा हमारे बिच में आजायेंगे सफ़ेद लाइट होंगी बाबा सबको दृष्टी लेंगे बाबा की दृष्टी का हम सम्पूर्ण सुख लेंगे। अपनी दृष्टी को बाबा पर हम स्थिर रखेंगे केवल महाज्योति दिखे दे जो भी भाई बहेने आये है ऐसे स्थिति में बैठेंगे केवल बाबा ही दिखे दे रहा है। ज्ञान सूर्य की किरणे चारो और फ़ैल रही है इसके बाद बाबा की मुरली चलेगी मुरली ऐसे सुनेंगे की बाबा हमसे बात कर रहे है। परमातम रूह रिहांन का आनंद लेंगे बाबा की दिव्य नैनो से देखेंगे फिर दादियाँ स्टेज पर आएगी और भोग लगेगा और इस तरह हम सभी परमातम मिलन का सुख पाएं सभी अपने लिए शुभ भावना के साथ

अब बैठे की आजका यह मिलन वरदान हो यादगार हो मेरे अंदर परमातम सुख भरने वाला हो। चले हम सब परमातम किरणों के निचे गीत बजायेंगे अब और सभी अपने चित्त को एकाग्र रखेंगे महसूस करे उपर सर्व शक्तिवान उसके शक्तियों की किरणे मुझ पर पड़ रही है मुझ में समां रही है।
गीत:- चलो हम चले पांच तत्वों के पार जहाँ रहते है शिव बाबा हमारे

ओम शांति।